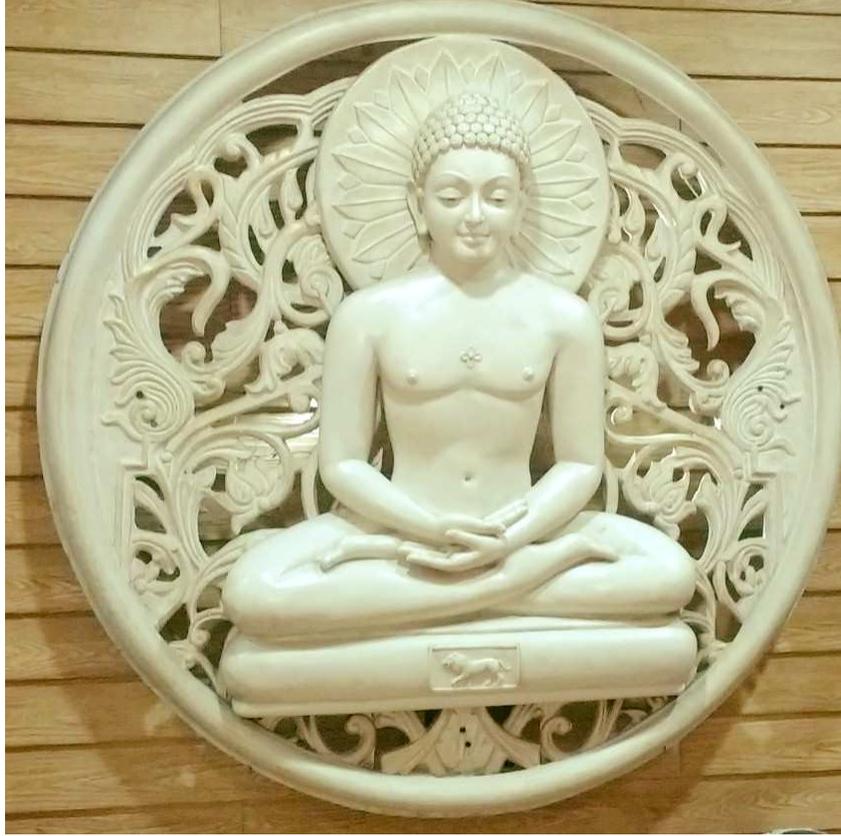


तीर्थंकर महावीर पर सात निबंध

डा. अनेकान्त कुमार जैन



संपादक
डाँ अरिहंत कुमार जैन

प्रकाशक
जिन फाउंडेशन, नई दिल्ली
2020

सम्पादकीय

जैन परंपरा के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान् महावीर का व्यक्तित्व इतना विराट था कि उसे शब्दों में नहीं समेटा जा सकता | आज उनके विराट व्यक्तित्व को समझाने के लिए उनके दर्शन और उनकी शिक्षा को व्यावहारिक भाषा में समझाने के लिए बहुत कार्य करने की आवश्यकता है | मीडिया और सोशल मीडिया के युग में इन माध्यमों का सदुपयोग करके भगवान् महावीर की शिक्षाओं को घर घर में, व्यक्ति व्यक्ति तक पहुँचाया जा सकता है | पिछले लगभग तीन दशकों से डॉ अनेकांत का यह प्रयास रहा है कि अखबार, पत्रिका और अन्य संचार माध्यमों से महावीर के संदेशों को जन जन तक पहुँचाया जाय |

पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके प्रमुख सात निबंधों का यह संकलन आपको भगवान् महावीर की वह तस्वीर दिखा सकता है जो आपने शायद न देख पाई हो | यह ई-बुक इसलिए भी तैयार की है कि मीडिया हाउस चाहे तो इन लेखों का उपयोग पुनः कर सकता है और सोशल मीडिया स्वयं सेवक इस किताब को शेयर करके महावीर के संदेशों को जन जन में पहुँचा कर अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं और हाँ यदि महावीर जयंती आदि पर्वों पर आपको भाषण देना हो तो बोलने लायक विषय भी आप यहाँ से सीख सकते हैं |

आशा है यह पुस्तक आपको रास आएगी |

डॉ अरिहंत कुमार जैन

संपादक

भगवान् महावीर की भाषा को समझें

डॉ अनेकांत कुमार जैन

हम भगवान् महावीर को जानना समझना चाहते हैं किन्तु जब तक हम उनकी भाषा और शैली को नहीं समझेंगे तब तक क्या हम उनके उपदेशों को सही अर्थों में समझ पाएंगे ? भगवान् महावीर ने जो सबसे बड़ी क्रांति की थी वह थी उनकी संवाद शैली । जिस अतीन्द्रिय ज्ञान के माध्यम से उन्होंने आत्मा के सत्य के बहुआयामी स्वरूप को जान लिया था उसे व्याख्यायित करते समय उनके सामने दो समस्याएँ थीं एक तो सभी लोग संस्कृत नहीं जानते थे और दूसरा इन्द्रिय ,वाणी और शब्दों की सीमित शक्ति वस्तु के परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले बहु आयामी स्वरूप को यथावत् अभिव्यक्त करने में समर्थ नहीं थी ।

इसके समाधान के लिए उन्होंने सबसे पहले उस समय पूरे भारत की जनभाषा प्राकृत में प्रवचन देना प्रारंभ किया – ‘भगवं च अब्दमागिए भासाए धम्मं आइक्ख’ |उस समय प्राकृतभाषा अनेक रूपों में प्रचलित भाषा थी बाद में सम्राट अशोक ने भी अपने अनेक शिलालेख प्राकृत भाषा में ही लिखवाए |कालिदास,शूद्रक आदि ने अपने नाटकों में प्राकृत भाषा का प्रयोग किया । भाषा वैज्ञानिक इसीलिए भारत की अधिकांश भाषाओं की जननी प्राकृत भाषा को मानते हैं ,अपभ्रंश और उसके बाद हिंदी का विकास भी इसी क्रम में हुआ है । इसलिए यदि भगवान् महावीर का दर्शन हमें वास्तविक रूप में समझना है तो हमें मूल प्राकृत आगमों को पढना पड़ेगा और उसके लिए प्राकृत भाषा को सीखना ही पड़ेगा ।

एक ही सत्य के अनेक विरोधी स्वरूप को वाणी के माध्यम से समझने समझाने के लिए उन्होंने ‘स्यादवाद’ की शैली का आविष्कार किया । यह अद्भुत शैली थी । यहाँ स्यात् पद जो कि मूल प्राकृत में ‘सिय’ शब्द है उसका अर्थ है- ‘कथंचित’ अर्थात् किसी अपेक्षा से , वाद शब्द का अर्थ कथन होता है अतः स्याद्वाद का अर्थ है किसी अपेक्षा से कथन । यह शैली इसलिए अपनाई क्यों कि हम जब भी कोई कथन करते हैं तो सापेक्ष कथन करते हैं ,सर्वथा कथन नहीं करते हैं । महावीर कहते हैं कि एक समय में अनंत धर्मात्मक वस्तु के किसी एक धर्म को ही हम वाणी के द्वारा कह सकते हैं तब श्रोता कैसे समझेगा कि वस्तु में अन्य धर्मों की भी सत्ता है ? और हमें यह भी निश्चित करना है कि कोई कथन करते समय हम अन्य धर्मों को गौण कर रहे हैं या उनका निषेध ही कर दे रहे हैं ? महावीर कहते हैं कि यदि किसी कथन के पहले हम स्यात् पद लगा दें

तो श्रोता समझ जायेगा कि अभी वस्तु का एक धर्म समझाया जा रहा है लेकिन अन्यधर्म भी हैं उनका निषेध नहीं है | महावीर कहते हैं कि आप यदि अपनी भाषा में 'ही' की जगह 'भी' का प्रयोग करें तो संघर्ष रहेगा है नहीं | जैसे आप कहें कि मेरा संप्रदाय 'भी' अच्छा है तो कभी किसी को कोई परेशानी नहीं है किन्तु जब आप यह कहते हैं कि मेरा सम्प्रदाय 'ही' अच्छा है तो इतर संप्रदाय को बुरा लगता है और संघर्ष होना शुरू हो जाता है | सिर्फ भाषा के अंतर से अभिप्राय का अंतर आ जाता है |

हमारी भाषा में भी अहिंसक शैली होनी चाहिए, महावीर कहते हैं कि यदि 'सब्जी काट दो' की जगह अगर आप 'सब्जी बना दो' कहें तो ज्यादा उपयुक्त होगा | भगवान् महावीर ने साधना के क्षेत्र में भाषा को लेकर बहुत प्रयोग किये | उनकी योगविद्या की प्रमुख साधना थी- 'वचन योग गुप्ति' | प्रथम तो साधक को मौन रहना चाहिए और अगर बोलना ही पड़े तो 'भाषा समिति' पालना चाहिए अर्थात् कम बोलना चाहिए और मात्र हित, मित, प्रिय वचनों का प्रयोग करना चाहिए | बोलते समय स्यादवाद की शैली का प्रयोग करना चाहिए ताकि सत्य धर्म की विराधना न हो | भगवान् महावीर को समझे बिना भारतीय संस्कृति को हम पूर्ण रूप से नहीं समझ सकते अतः उन्हें समझने के लिए हमें प्राकृत भाषा और स्यादवाद सिद्धांत सीखना ही होगा | सहिष्णुता बिना स्यादवाद के नहीं आ पाएगी | वास्तव में स्यादवाद सहिष्णुता, सह-अस्तित्व और साधना का एक सशक्त माध्यम है | स्यादवाद के बिना भगवान् महावीर की देशना को सही अर्थों में समझना असंभव है |

आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे भगवान महावीर

डा. अनेकान्त कुमार जैन

जैन धर्म में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर चौबीसवें व अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर तक एक सुदीर्घ परंपरा रही है। भगवान महावीर का जन्म, ईसा से ५९९ वर्ष पूर्व, चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को, वैशाली गणतंत्र के, लिच्छिवी वंश के महाराज, श्री सिद्धार्थ और माता त्रिशला देवी के यहाँ हुआ था। वे स्वयं एक महान व्यक्तित्व के धनी थे। वे इतने आकर्षक तथा प्रभावशाली थे कि जो भी उन्हें देखता उनका हो जाता था। वे सिर्फ देखने में ही सुन्दर नहीं थे बल्कि उनका आध्यात्मिक व्यक्तित्व भी इतना निर्मल था कि उनके पास जाने मात्र से लोग अपनी सारी समस्याओं का समाधान पा जाते थे। उन्होंने सफल व्यक्तित्व के कई सूत्र दिए। व्यक्तित्व व्यक्ति की मात्र अभिव्यक्ति नहीं है, एक समग्र प्रक्रिया है। मनुष्य-चरित्र को परखना भी बड़ा कठिन कार्य है, किन्तु असम्भव नहीं है। कठिन वह केवल इसलिए नहीं है कि उसमें विविध तत्त्वों का मिश्रण है बल्कि इसलिए भी है कि नित्य नई परिस्थितियों के आघात-प्रतिघात से वह बदलता रहता है। वह चेतन वस्तु है। परिवर्तन उसका स्वभाव है। प्रयोगशाला की परीक्षण नली में रखकर उसका विश्लेषण नहीं किया जा सकता। उसके विश्लेषण का प्रयत्न सदियों से हो रहा है। हजारों वर्ष पहले भगवान महावीर ने भी उसका विश्लेषण किया था। इन्हीं के द्वारा साक्षात् उपदिष्ट पवित्र वाणी को आचार्यों ने प्राकृत भाषा में लिपि बद्ध किया जिन्हें आगम कहा जाता है। इन आगमों में व्यक्ति के विकास लिए अनेक सूक्ष्म सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। इन दार्शनिक सिद्धांतों की गहराई में यदि हम जायेंगे तो हमें वो सूत्र प्राप्त होंगे जिनसे एक व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

रत्नत्रय और व्यक्तित्व

भगवान महावीर ने रत्नत्रय का सिद्धांत व्यक्ति के मौलिक विकास में सहायक माना है। रत्नत्रय के तीन रत्न हैं-

१. सच्चा विश्वास / सही दृष्टि
२. सही ज्ञान
३. सही आचरण

आध्यात्मिक दृष्टि से ये सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चारित्र के नाम से जाने जाते हैं। भगवान महावीर ने ये माना है कि व्यक्तित्व का विकास सर्वांगीण होना चाहिए। उसके लिए इन तीनों की आवश्यकता है।

१.सच्चा विश्वास /सही दृष्टि

व्यक्तित्व का सबसे बड़ा पहलु है कि आपकी दृष्टि कैसी है ?यदि आप अपने लक्ष्य के प्रति सही दृष्टिकोण नहीं रखते हैं या फिर उस पर या खुद पर विश्वास नहीं है तब लक्ष्य की शुरुआत ही नहीं हो सकती |आपका दृष्टिकोण सही होना चाहिए | आपकी दृष्टि और विश्वास से आपकी आपके लक्ष्य के प्रति निष्ठा का पता चलता है |और उसी से निर्धारित होता है कि आपकी सफलता कितनी सुनिश्चित है |

२.सही ज्ञान-

जैन धर्म कहता है सही विश्वास,निष्ठा तथा दृष्टि तो अनिवार्य है ही किन्तु मात्र यही हमारे व्यक्तित्व का निर्माण नहीं करता है और ना ही मात्र इतने से लक्ष्य की प्राप्ति ही संभव है इसके साथ साथ हमें अपने लक्ष्य तक पहुचाने वाले उपायों का सही ज्ञान भी बहुत जरूरी है|सही ज्ञान के अभाव में हम लक्ष्य से भटक सकते हैं | लक्ष्य के बारे में हमारे पास सही तथा प्रामाणिक सूचनाएं भी होनी चाहिए|इसीलिए सम्यक ज्ञान बहुत जरूरी है | सही विश्वास /सही दृष्टि तथा सही ज्ञान एक साथ व्यक्ति में उत्पन्न होते हैं यह जैन दर्शन की तात्त्विक मान्यता है|

३.सही आचरण

सही विश्वास/निष्ठा/दृष्टि तथा सही ज्ञान भी हो गया किन्तु महावीर कहते है कि अभी भी आप पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाए हैं | अभी सफर बाकी है ,आपका व्यक्तित्व पूर्ण नहीं हो पाया है | आप अपने लक्ष्य को तब तक नहीं प्राप्त कर सकते जब तक कि आप सही आचरण को प्राप्त नहीं कर लेते | जिस लक्ष्य पर हमें सच्चा विश्वास है साथ ही उसका तथा उसके रास्ते का सच्चा ज्ञान भी है किन्तु यदि उस रास्ते पर हम चलें नहीं तो क्या होगा ? क्या हम मंजिल तक पहुँच पायेंगे ?नहीं | पथ पर सही तरीके से चलना सही आचरण है | सम्यक चारित्र ही हमारे व्यक्तित्व का अंतिम सोपान है |

यदि कोई यह माने कि सच्चा विश्वास मात्र सफलता दिला देगा या मात्र ज्ञान हमें सफल कर देगा या फिर विश्वास और ज्ञान से रहित मात्र आचरण हमें सफल बना देगा तो महावीर के अनुसार यह भ्रम मात्र है | ऐसी मान्यता एकांतवाद है जो हमें लक्ष्य से कभी नहीं मिलने देगी | रत्नत्रय की पूर्णता ही पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करती है|

भगवान महावीर ने रत्नत्रय को आधार बनाकर अनेकान्त ,स्याद्वाद ,अहिंसा तथा अपरिग्रह ये चार प्रमुख सिद्धांत इस जगत को दिए जिनसे व्यक्ति के एक ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है जो स्वयं उसके लिए तो कल्याणकारी होगा ही साथ ही वह परिवार,समाज,राष्ट्र तथा सम्पूर्ण विश्व के लिए भी कल्याणकारी होगा| एक संपूर्ण और सफल व्यक्तित्व के लिए हमें भगवान महावीर ने निम्नलिखित सूत्र दिए -

- १.विचारों में अनेकांत
- २.वाणी में स्याद्वाद
- ३.आचार में अहिंसा
- ४.जीवन में अपरिग्रह

अनेकांत-स्याद्वाद और व्यक्तित्व

भगवान महावीर ने अनेकान्त स्याद्वाद ये दो ऐसे सिद्धांत दिए जिसकी आज पूरे विश्व को जरूरत है । इससे पहले कि हम इसकी व्यवहारिक आवश्यकता और व्यक्तित्व विकास से सम्बंधित इसके आयामों को छुएं हम पहले इन सिद्धांतों के शास्त्रीय स्वरूपों पर ध्यान देंगे ।

अनेकान्त वस्तु के विराट स्वरूप को जानने का वह तरीका है ,जिसमें विवक्षित धर्म को जान कर भी अन्य धर्मों का निषेध नहीं किया जाता । उन्हें मात्र गौण या अविवक्षित कर दिया जाता है और इस प्रकार मुख्य- गौण भाव से सम्पूर्ण वस्तु का ज्ञान और उसका वर्णन हो जाता है।उसका कोई भी अंश कभी छूट नहीं पाता क्यों कि जिस समय जो धर्म विवक्षित रहता है उस समय वह धर्म मुख्य तथा अन्य शेष धर्म गौण रह जाते हैं।इस दृष्टि से जब मनुष्य अनंत धर्मात्मक वस्तु को स्पर्श करने लग जाता है तब वह विचार करता है कि हमें उस शैली में वचन विन्यास करना चाहिए जिसमें इस अनंत धर्मात्मक वस्तु का यथार्थ प्रतिपादन हो सके ।उस निर्दोष वचन विन्यास की आवश्यकता ने 'स्याद्वाद' का आविष्कार कर दिया ।इसमें लगा 'स्यात्' पद कथञ्चित् के अर्थ में प्रत्येक वाक्य के सापेक्ष होने की सूचना देता है ।इस प्रकार अनेकान्त और स्याद्वाद में वाच्य-वाचक सम्बन्ध है । अनेकान्त की कथन पद्धति का नाम ही स्याद्वाद है ।सत्य के प्रतिपादन में स्याद्वाद की शैली हमारे सारे संशय दूर कर सकती है।

व्यक्ति यदि किसी भी वस्तु, घटना या परिस्थिति के एक ही पहलु को देखता है और उससे इतर पक्ष को देख ही नहीं पाता तो यह उसके व्यक्तित्व की बहुत बड़ी कमजोरी मानी जायेगी । अनेकान्त के चिंतन के माध्यम से व्यक्ति के बहुआयामी दृष्टिकोण का विकास होता है । व्यक्ति जब यह समझने,देखने और सोचने लगता है कि एक ही वस्तु की अनेक दृष्टियों से ही सही व्याख्या की जा सकती है और किसी एक दृष्टि से देखने पर वस्तु का पूरा स्वरूप व्याख्यायित नहीं किया जा सकता तब उसके चिंतन का विकास होता है इसलिए महावीर कहते हैं कि चिंतन में अनेकान्त दृष्टि रखो ।हमारी सोच हमारे व्यक्तित्व का सबसे बड़ा आइना है ।हम जैसा चिंतन रखते है हमारा व्यक्तित्व भी वैसा ही बनता है ।स्याद्वाद हमारी वाणी को मैनेज करता है ।वो कहता है कि वाक्यविन्यास ऐसा हो जिसमें वस्तु,घटना या परिस्थिति का कोई भी पक्ष छूट ना जाये ,हमारी वाणी में सापेक्षता होनी चाहिए। विज्ञान कहता है जीभ पर लगी चोट सबसे जल्दी ठीक होती है और ज्ञान कहता है के जीभ से लगी चोट कभी ठीक नहीं होती।अपनी जीभ को मर्यादा और संयम में रखेंगे तो कभी किसी के कटाक्ष का सामना नहीं करना पड़ेगा।हमारी बोली हमारे व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण भाग है इसके द्वारा ही हम अपनी प्रभावक अभिव्यक्ति कर पाते हैं ।इसीलिए भगवान महावीर ने वाणी में स्याद्वाद की बात समझाई ।

अहिंसा और व्यक्तित्व

भगवान महावीर की मूल शिक्षा है - 'अहिंसा'। भगवान महावीर ने, अपने स्वयं के जीवन से, इसे वह प्रतिष्ठा दिलाई कि अहिंसा के साथ भगवान महावीर का नाम ऐसा जुड़ गया, कि दोनों को अलग कर ही नहीं सकते। अहिंसा का सीधा-साधा अर्थ करें, तो वह होगा कि, व्यावहारिक जीवन में, हम किसी को कष्ट नहीं पहुंचाएं, किसी प्राणी को अपने स्वार्थ के लिए दुःख न दें। 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत्' इस भावना के अनुसार, दूसरे व्यक्तियों से ऐसा व्यवहार करें, जैसा कि, हम उनसे अपने लिए अपेक्षा करते हैं। इतना ही नहीं, सभी जीव-जन्तुओं के प्रति अर्थात् पूरे प्राणी मात्र के प्रति, अहिंसा की भावना रखकर, किसी प्राणी की, अपने स्वार्थ व जीभ के स्वाद आदि के लिए, हत्या न तो करें और न ही करवाएं और हत्या से उत्पन्न वस्तुओं का भी उपभोग नहीं करें। हमारे आचार में अहिंसा हो तभी वह सम्पूर्ण व्यक्तित्व बन सकता है।

अपरिग्रह और व्यक्तित्व

परिग्रह का अर्थ है संचय , अपरिग्रह यानी त्याग। परिग्रह तनाव और आसक्ति को जन्म देता है और यही फिर अनेक बाहरी समस्याओं का भी कारण बन जाता है। हम देख रहे हैं कि आधुनिक युग में परिग्रहवाद बहुत बढ़ता जा रहा है और इसीलिए मनुष्य अनेक मानसिक , आर्थिक , पारिवारिक समस्याओं से घिरता जा रहा है। ऐसे में महावीर का अपरिग्रहवाद ही मानव को शांति दे सकता है। विज्ञान ने 'परिग्रह' को बहुत अधिक बढ़ावा दिया है और 'परिग्रह' ही सामाजिक, आर्थिक अपराध का मूल कारण है। अपराध, हत्याएं, भ्रष्टाचार, दहेज प्रथा ये सभी 'परिग्रह' की देन हैं। भगवान महावीर ने कहा कि उतना रखो जितनी आवश्यकता है, यानी 'पेट भरो... पेटी नहीं।' यदि आज हम महावीर के इन सिद्धांतों को मान लें और इसका अनुसरण करें तो विश्व भर में सामाजिक खुशहाली होगी। और सारे विश्व में सच्चा समाजवाद स्थापित हो सकेगा। इसलिए जीवन में अपरिग्रह का सिद्धांत मनुष्य के व्यक्तित्व को सर्वोदयी बनाता है।

लेश्या और व्यक्तित्व

लेश्या हमारी चेतना से निकलने वाली विशेष प्रकार की रश्मियाँ हैं। महावीर ने लेश्या के आधार पर छह प्रकार के व्यक्तित्व की चर्चा की है। १. कृष्ण २. नील ३. कापोत ४. पीत ५. पद्म ६. शुक्ल। यह लेश्यायें व्यक्ति की मानसिकता के आधार पर उसके आभामंडल का निर्माण करती हैं। इनमें से १. कृष्ण २. नील ३. कापोत-ये तीन अशुभ लेश्यायें हैं और ४. पीत ५. पद्म ६. शुक्ल-ये तीन शुभ लेश्यायें हैं। यह विषय रंग मनोविज्ञान का भी है। कृष्ण, नील , और कपोत --ये तीनों लेश्याएँ बदलती हैं; तब तेजस, पद्म और शुक्ल लेश्याओं का अवतरण होता है और यहीं से

परिवर्तन का क्रम प्रारम्भ होता है। लेश्या परिवर्तन से ही अध्यात्म की यात्रा आगे बढ़ती है। लेश्या परिवर्तन से ही धर्म सिद्ध होता है। अध्यात्म की यात्रा का प्रारम्भ तेजस लेश्या से होता है। तेजस लेश्या का रंग लाल अर्थात् बाल-सूर्य जैसा अरुण होता है। रंगों का मनोविज्ञान बताता है कि अध्यात्म की यात्रा लाल रंग से ही शुरू होती है।

जब व्यक्ति का चरित्र शुद्ध होता है, तब उसका संकल्प अपने आप फलित होता है। चरित्र की शुद्धि के आधार पर संकल्प की क्षमता जागती है। जिसका संकल्प बल जाग जाता है उसकी कोई भी कामना अधूरी नहीं रहती। संकल्प लेश्याओं को प्रभावित करते हैं। लेश्या का बहुत बड़ा सूत्र है चरित्र। तेजोलेश्या, पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या ये तीन उज्वल लेश्याएं हैं। इनके रंग चमकीले होते हैं। कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या ये तीन अशुद्ध लेश्याएं हैं। इनके रंग अंधकार के रंग होते हैं। वे विकृत भाव पैदा करते हैं। वे रंग हमारे आभामंडल को धूमिल बनाते हैं। चमकते रंग आभामंडल में निर्मलता और उज्वलता लाते हैं। वे आभामंडल की क्षमता बढ़ाते हैं। उनकी जो विद्युत चुंबकीय रश्मियां हैं वे बहुत शक्तिशाली बन जाती हैं।

इसी प्रकार चौदह गुणस्थान तथा बारह अनुप्रेक्षाओं के सन्दर्भ में भी व्यक्ति के आंतरिक और बाह्य व्यक्तित्व विकास की चर्चा भगवान महावीर ने की है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य ये पञ्च अणुव्रत भी एक संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। भगवान महावीर की यह स्पष्ट अवधारणा है कि हमारा व्यक्तित्व मात्र कपड़ों या शारीरिक सौंदर्य से ही निर्मित नहीं होता उसमें हमारा चिंतन, वाणी और व्यवहार तथा आध्यात्मिक दृष्टि भी महत्वपूर्ण घटक हैं जो हमारे सही और सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करता है। यदि आज के युवा भगवान महावीर के इन सिद्धांतों को समझेंगे तो वे एक आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं।

भगवान महावीर का प्राचीन गणतंत्र 'वैशाली'

डॉ अनेकान्त कुमार जैन

भारत का गणतंत्र पूरे विश्व में प्रसिद्ध है | पूरे विश्व को जनतंत्र का उपदेश देने वाला वैशाली गणराज्य भारत में ही स्थित था | आज विश्व के अधिकांश देश गणराज्य हैं, और इसके साथ-साथ लोकतान्त्रिक भी | भारत स्वयं एक लोकतान्त्रिक गणराज्य है | ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार वैशाली में ही विश्व का सबसे पहला गणतंत्र कायम किया गया था। आज वैशाली बिहार प्रान्त के वैशाली जिला में स्थित एक ऐतिहासिक स्थल है।

इसके अध्यक्ष लिच्छवी संघ नायक महाराजा चेटक थे। इन्हीं महाराजा चेटक की ज्येष्ठ पुत्री का नाम 'प्रियकारिणी त्रिशला' था जिनका विवाह वैशाली गणतंत्र के सदस्य एवं 'क्षत्रिय कुण्डग्राम' के अधिपति महाराजा सिद्धार्थ के साथ हुआ था और इन्हीं के यहाँ 599 ईसापूर्व चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन बालक वर्धमान का जन्म हुआ जिसने अनेकान्त सिद्धांत के माध्यम से पूरे विश्व को लोकतंत्र की शिक्षा दी और तीर्थंकर महावीर के रूप में विख्यात हुए | भगवान महावीर की जन्म स्थली होने के कारण जैन धर्म के मानने वालों के लिये वैशाली एक पवित्र स्थल है। वज्जिकुल में जन्मे भगवान महावीर यहाँ २२ वर्ष की उम्र तक रहे थे।

साहित्य से ज्ञात होता है कि भगवान महावीर के काल में अनेक गणराज्य थे। तिरहुत से लेकर कपिलवस्तु तक गणराज्यों का एक छोटा सा गुच्छा गंगा से तराई तक फैला हुआ था। गौतम बुद्ध शाक्यगण में उत्पन्न हुए थे। लिच्छवियों का गणराज्य इनमें सबसे शक्तिशाली था, उसकी राजधानी वैशाली थी। लिच्छवियों के संघ (अष्टकुल) द्वारा गणतान्त्रिक शासन व्यवस्था की शुरुआत वैशाली से की गई थी। लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व में यहाँ का शासक जनता के प्रतिनिधियों द्वारा चुना जाने लगा और गणतंत्र की स्थापना हुई। अतः दुनियाँ को सर्वप्रथम गणतंत्र का ज्ञान कराने वाला स्थान वैशाली ही है। आज वैश्विक स्तर पर जिस लोकतंत्र को अपनाया जा रहा है वह यहाँ के लिच्छवी शासकों की ही देन है। गौतम बुद्ध का तीन बार इस पवित्र स्थल पर आगमन हुआ। गौतम बुद्ध ने इस गणराज्य की सफलता के सात कारण बतलाए-

(1) सभी संघों की जल्दी- जल्दी सभाएं करना और उनमें अधिक से अधिक सदस्यों का भाग लेना।

(2) राज्य के कामों को मिलजुल कर पूरा करना |

(3) कानूनों का पालन करना तथा समाज विरोधी कानूनों का निर्माण न करना।

(4) वृद्ध व्यक्तियों के विचारों का सम्मान करना।

(5) महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार न करना।

(6) स्वधर्म में दृढ़ विश्वास रखना |

(7) अपने कर्तव्य का पालन करना।

इन सात कारणों पर आज भी विचार करने की आवश्यकता है | उस समय 16 महाजनपदों में वैशाली का स्थान मगध के समान महत्वपूर्ण था। बौद्ध तथा जैन धर्मों के अनुयायियों के अलावा ऐतिहासिक पर्यटन में दिलचस्पी रखने वाले लोगों के लिए भी वैशाली महत्वपूर्ण है। वैशाली की भूमि न केवल ऐतिहासिक रूप से समृद्ध है वरन कला और संस्कृति के दृष्टिकोण से भी काफी धनी है। फिर बाद में हमने राजतंत्र का भी दृश्य देखा और अंग्रेज तंत्र का भी दंश सहा | एक लंबे अंतराल के बाद आज हमने जो यह नई गणतंत्रीय व्यवस्था प्राप्त की है, वह मूलतः हमारे लिए अपरिचित नहीं है, आवश्यकता बस उस पुरानी स्मृति को फिर से जगाने की है। राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर की ये पंक्तियाँ हमें अपने कर्तव्यों का बोध कराती हैं –

वैशाली जन का प्रतिपालक, विश्व का आदि विधाता,
जिसे ढूंढता विश्व आज, उस प्रजातंत्र की माता॥
रुको एक क्षण पथिक, इस मिट्टी पे शीश नवाओ,
राज सिद्धियों की समाधि पर फूल चढ़ाते जाओ॥

भगवान महावीर की योग विद्या

डा. अनेकान्त कुमार जैन

ईसा से लगभग छह सौ वर्ष पूर्व भारत की धरती पर भगवान महावीर का जन्म साधना के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी युग की शुरुआत थी। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन वैशाली नगर के राजा ज्ञातृवंशी कश्यप गोत्रीय क्षत्रिय सिद्धार्थ तथा माता त्रिशला के राजमहल में बालक वर्धमान के रूप में एक ऐसे पुत्र ने जन्म लिया जिसने तत्कालीन प्रसिद्ध धर्म की व्याख्याओं में अध्यात्म को सर्वोपरि बतलाकर संपूर्ण चिन्तन धारा को एक नयी दिशा दी। इनका जन्म वैशाली गणराज्य के कुण्डग्राम में हुआ था। राजतंत्र से लोकतंत्र तक का पाठ पढ़ाने वाला वैशाली इस विश्व का प्रथम गणराज्य माना जाता है, जहां जनतंत्र की शुरुआत हुई।

बचपन में घटित कई घटनाओं के आधार पर भगवान महावीर के कई नाम प्रसिद्ध हुए जिनमें प्रमुख हैं वीर, अतिवीर, महावीर, वर्धमान तथा सन्मति। इनकी माता का नाम त्रिशला के अलावा प्रियकारिणी देवी भी था। भगवान महावीर ने देखा कि भारत में धर्म के नाम पर मात्र कोरा क्रिया काण्ड ही चल रहा है। अध्यात्म क्षीण हो रहा है। उन्होंने अनुभव किया कि बिना अध्यात्म के आत्मकल्याण संभव नहीं है। सांसारिक बंधनों से मुक्त होने के लिए महज अर्घ चढ़ाने से कुछ नहीं होगा बल्कि कुछ और है जो मनुष्य को पूर्ण सुखी होने का रास्ता दिखला सकता है।

इसकी शुरुआत उन्होंने स्वयं अपने जीवन से की। दूसरों का अनुसरण करने की अपेक्षा 'स्वयं सत्य खोजें का मार्ग उन्होंने अपनाया। उन्हें सत्य खोजने की धुन इस कदर सवार हो गयी कि इसके लिए उन्होंने समस्त राज-पाट तक छोड़ दिया और आत्मकल्याण के लिए वन में निकल गए। उन्होंने योग साधना की। मन गुप्ति, वचन गुप्ति और काय गुप्ति को साधकर त्रियोग-त्रिगुप्ति को धारण किया। प्राणायाम, कायोत्सर्ग तथा नासाग्र दृष्टि जैसे वे सारे प्रयोग उन्होंने किए जो आत्मानुभूति प्राप्त कराने में सहायक हो सकते थे। सर्वोत्कृष्ट शुक्ल ध्यान की अवस्था प्राप्त करने के लिए उन्होंने सभी प्रयोग किए। आसनों में दो आसनों को ही उन्होंने आत्म कल्याण में सहायक माना, एक पद्मासन और दूसरा खड्गासन। वीतराग मुद्रा के लिए पद्मासन अवस्था में नाभि के ठीक नीचे दो हाथों को स्थापित कर ध्यान लगाया। खड्गासन में खड़े होकर कायोत्सर्ग किया। इतिहास गवाह है कि तीर्थंकरों की प्राचीन से प्राचीन सभी प्रतिमाएं मात्र इन्हीं दो आसनों में परमयोगी अवस्था में ही मिलती हैं।

भगवान महावीर ने खोज की कि जिस प्रकार अशुभोपयोग पापबंध का कारण हैं, उसी प्रकार शुभोपयोग भी पुण्यबंध का कारण हैं। अशुभोपयोग का फल नरक है, दुःख है, शुभोपयोग का फल स्वर्ग है, इन्द्रिय सुख हैं, किंतु ये दोनों ही अवस्थाएं मुक्ति नहीं दिला सकतीं।

कुछ लोग स्वर्ग को ही मुक्ति मान रहे थे और स्वर्ग को ही जीवन का ध्येय मानते थे; किंतु भगवान महावीर का मानना था कि स्वर्ग भी संसार है और बंधन है। इन्द्रियों के द्वारा जब तक सुख और दुःख का अनुभव होता रहेगा तब तक संसार रहेगा। इसलिए अतीन्द्रिय सुख को प्राप्त करना होगा। उन्होंने अपनी साधना का निष्कर्ष बतलाया कि शुभोपयोग और अशुभोपयोग दोनों ही बंधन हैं। यदि मुक्ति चाहिए तो इन दोनों से रहित होना होगा और वह दशा शुद्धोपयोग की है। शुद्धोपयोग से सीधा तात्पर्य है अतीन्द्रिय आत्मानुभूति। योग और साधना के नाम पर चल रहे वे सारे प्रयोग व्यर्थ हैं, जो अतीन्द्रिय आत्मानुभूति नहीं करा सकते, बंधनों से मुक्ति नहीं दिला सकते। महावीर की योग विद्या शरीर के रोग दूर करने तक सीमित नहीं थी, वे पूरा भव रोग ही दूर करना चाहते थे। भगवान महावीर ने कहा कि शुद्धोपयोग को प्राप्त करने के लिए सबसे पहले मनुष्य को मिथ्यात्व (गलत दृष्टिकोण) को छोड़ना होगा और अनेकान्त दृष्टि अपनानी होगी। उन्होंने बताया कि अप्रमत्त भाव का विकास करना चाहिए। राग, द्वेष तथा मोह से ग्रसित मनुष्य जागते हुए भी सो रहा है। वह जागृत नहीं है और यही प्रमाद स्व-पर हिंसा का कारण भी बनता है। भगवान महावीर की अहिंसा पूरे विश्व में प्रसिद्ध हो गयी। यह अहिंसा सिर्फ दूसरे जीवों को नहीं मारना ही नहीं है, बल्कि स्वयं की जागृति भी है। अप्रमत्तदशाही अहिंसा योग है। जो स्वयं के प्रति जाग गया वह दूसरों को दुःख दे ही नहीं सकता। अपने प्रति जागृति उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। व्रत-उपवास संयम-शील तपस्या के माध्यम से काया को जागृत बनाना, पूरी काया में प्रवाहित चैतन्य का अनुभव करना और इसके बाद काया से परे मात्र चैतन्यानुभूति होना ही योग है। यह परम जागरण की अवस्था है। कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन प्रातःकाल उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया। उन्होंने जो साधना का मार्ग बतलाया वह भारतीय योग विद्या के क्षेत्र में एक अभिनव प्रयोग था, जो सफल रहा।

महावीर ने सिखलाई जीवन जीने की कला

डॉ अनेकांत कुमार जैन

जैन धर्म भारत का एक अत्यंत प्राचीन धर्म है जिसे श्रमण परंपरा के नाम से जाना जाता है | जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर ने संसार के सभी मनुष्यों को जीवन जीने की कला सिखलाई | उन्होंने सिखाया कि संसार में किस तरह रहना चाहिए ताकि मानव मात्र का कल्याण हो सके | प्रत्येक मनुष्य के कल्याण के लिए उन्होंने जो मार्ग बतलाया उसे हम सात कदमों के माध्यम से समझ सकते हैं -

प्रथम कदम - सप्त व्यसन से दूरी

सबसे पहले भगवान् महावीर ने रिसर्च की कि मनुष्यों की कौन सी ऐसी कमियां हैं जो उसके विकास को रोक रहीं हैं तथा उसका जीवन बर्बाद कर रहीं हैं | अपनी इस रिसर्च में उन्होंने सात आदतें ऐसी पायीं जिनके कारण वह उसका जीवन बर्बाद हो रहा है और आगे नहीं बढ़ पा रहा है | इसलिए अच्छा ,स्वस्थ और सुन्दर जीवन जीने के लिए उन्होंने इन सात व्यसनों को सबसे पहले छोड़ने को कहा¹ -

१.जुआ खेलना २.मांस खाना ३.मदिरापान (किसी भी किस्म के नशे का सेवन)

४.वेश्या सेवन ५.शिकार खेलना ६.चोरी करना ७.परस्त्री रमण

यदि ये व्यसन बने रहेंगे तो आध्यात्मिक तो छोड़िये , किसी भी तरह का लौकिक कल्याण भी आप नहीं कर सकते | अपने साथ साथ परिवार,समाज ,राष्ट्र और पूरे विश्व को हानि पहुँचाने का कार्य ये सात व्यसन करते हैं | अतः सबसे पहले प्रत्येक मनुष्य को ये व्यसन जितना जल्दी हो सके छोड़ देना चाहिए |

द्वितीय कदम - रत्नत्रय का सिद्धांत -

भगवान् महावीर ने फिर एक रिसर्च की | उन्होंने विचार किया कि सात प्रकार के व्यसनों से दूर होने के बाद अब मनुष्य आत्मकल्याण के लायक हो गया है अतः इसके दुखों को दूर करने का कुछ ऐसा रास्ता खोजना चाहिए ताकि मनुष्य दुःख दूर करने के नकली उपायों से बचे और वास्तव में इसके दुःख दूर हो सके | उन्होंने बारह वर्ष तक कठोर साधना की ,यह उनका आत्मानुसंधान का काल था | उन्होंने इस दौरान कोई भी उपदेश नहीं दिया ,वे मौन रहे | जब उनका आत्मानुसंधान पूरा हो गया और उन्हें दिव्य अतीन्द्रिय ज्ञान की प्राप्ति हो गयी तब उन्होंने जो रास्ता पाया वह सभी मनुष्यों को बतलाया |

उन्होंने कहा सुखी होने और सच्चे जीवन जीने की कला है - सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र्य |² उन्होंने इस कला को मोक्ष का मार्ग कहा |उन्होंने कहा कि दुःख भी एक रोग है और उसके लिए

भी दवाई की जरूरत है , हमारे संसार सम्बन्धी सभी रोगों के नाश के लिए उन्होंने यह त्रिरत्न रूपी त्रिफला चूर्ण खोज निकाला | उन्होंने कहा कि सबसे पहले हमें सच्चा विश्वास या सच्ची श्रद्धा करना सीखना चाहिए , लेकिन सिर्फ श्रद्धा से काम नहीं चलेगा उसके साथ साथ सच्चा ज्ञान भी प्राप्त करना चाहिए और सिर्फ श्रद्धा या ज्ञान से भी बात नहीं बनेगी ...इन दोनों के साथ साथ हमें सच्चा आचरण (चारित्र) भी धारण करना चाहिए | महावीर बहुत वैज्ञानिक हैं उन्होंने समझाया कि अगर सच्चे डॉक्टर पर सच्चा विश्वास न हो तो दवाई काम नहीं करती ,इसलिए पहले डॉक्टर पर सच्चा विश्वास करोलेकिन सिर्फ भरोसा कर लो तो भी रोग दूर नहीं होगाइसलिए वह जो उपचार और दवाई बताये उसका सही ज्ञान प्राप्त करोदवाई का सही ज्ञान नहीं होगा कि कौन सी कब खानी है तो भी रोग दूर नहीं हो पायेगा | इसके बाद वो कहते हैं कि आपने सिर्फ विश्वास और ज्ञान तो कर लिया लेकिन वो दवाई समय पर खाई नहीं तो भी रोग दूर नहीं होगा अतः विश्वास भी जरूरी है,ज्ञान भी जरूरी है तथा उसके अनुसार आचरण भी जरूरी है – तभी दुखों से मुक्ति संभव है |

तृतीय कदम - सम्यग्दर्शन – सच्चा विश्वास और भेद विज्ञान

भगवान् महावीर ने देखा कि लोग विश्वास और श्रद्धा तो करते हैं लेकिन कभी कभी अज्ञानता में गलत श्रद्धान कर लेते हैं अतः धर्म का वास्तविक स्वरूप समझ कर फिर श्रद्धान करना चाहिए | कोई समझा देता है कि पहाड़ से नीचे कूद जाओ या नदी में डूब जाओ तो मोक्ष हो जायेगा , कोई कहता है कि पशुओं की बलि चढाओ तो पुण्य होता है ,कोई नशा करने से परमात्मा का दर्शन करवाने की बात कहता है तो हम जल्दी भरोसा कर लेते हैं और यह मानने लगते हैं कि यही धर्म है ..और अपनी श्रद्धा और विश्वास को गलत दिशा दे देते हैं इसलिए सबसे पहले जरूरी है मनुष्य सच्चे धर्म की पहचान करके विश्वास करे | अन्यथा हमेशा की तरह लुटता ही रहेगा |

भेद विज्ञान

सम्यग्दर्शन की गहरी व्याख्या करते समय वे भेद विज्ञान की कला समझाते हैं और कहते हैं कि इस कला से मनुष्य संसार के दुखों में भी कीचड़ में कमल की तरह उससे भिन्न रह सकता है | अनासक्त भाव और साम्य दृष्टि ...यह भेद विज्ञान पूर्वक जीवन जीने की अनुपम कला है | महावीर कहते हैं - सृष्टि नहीं दृष्टि बदलो |

इधर कहाँ आ फंसे बटोही तुम भी ऐसे गाँव में
जहाँ धूल भी धोखा देती काँटा चुभे हर पाँव में
कौन कहे छोड़ो महल अटारी पत्नी बच्चे छोड़ दे
जो जहाँ है वहीं रहने दे केवल दृष्टि मोड़ ले

चतुर्थ कदम – सम्यग्ज्ञान- बहु आयामी दृष्टिकोण

सम्यग्ज्ञान के माध्यम से किसी भी घटना, परिस्थिति या परिणाम की सही जानकारी होती है | जो वस्तु जैसी है उसका जो स्वरूप है, उसको वैसा ही जानना यह सम्यग्ज्ञान है | प्रायः

सही ज्ञान के अभाव में मनुष्य व्यर्थ ही तनावग्रस्त रहता है। सही ज्ञान ही समस्या का समाधान कर सकता है। महावीर ने अनेकांत का सिद्धांत की खोज वस्तु, घटना, परिस्थिति या परिणाम की सर्वांग जानकारी के लिए की। सत्य को कभी भी एक दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता क्यों कि वह बहु आयामी है। इसलिए हमें भी अपना दृष्टिकोण बहु आयामी रखना चाहिए। यह चिंतन की कला है। हमारे सोचने का तरीका ठीक होगा और सकारात्मक होगा तो हमारे आधे दुःख वहीं कम हो जायेंगे। हर घर में, परिवार में, समाज में झगड़े का एक ही कारण है कि हम सिर्फ अपने नजरिये से देखते हैं ..जिस दिन हम दूसरे के नजरिये से भी देखने लगेंगे उस दिन जीवन का रंग ही बदल जायेगा। जीवन बहु रंगी हो जायेगा।

पांचवा कदम – सम्यग्चारित्र

सम्यग्चारित्र मनुष्य को सदाचरण सिखाता है। हमारे तनाव - अवसाद का मुख्य कारण हमारा गलत आचरण भी है। क्रोध, मान, माया, लोभ - ये चार ऐसे भाव है जो शांत चित्त आत्म को कष्ट देते हैं अर्थात दुःखी करते हैं इसलिए इनका नाम जैनदर्शन में 'कषाय' रखा गया है। आत्मा के चारित्रिक गुणों का घात इन्हीं चार कषायों के कारण होता है, और इन्हीं कषायों की प्रबलता मनुष्य को तनावग्रस्त भी करती है। शुद्ध चारित्र की प्राप्ति के लिए इन चार कषायों की समाप्ति बहुत आवश्यक है। ये कषायें जैसे जैसे मन्द होती हैं वैसे वैसे तनाव घटता जाता है। अन्य कई प्रकार ही मानसिक बीमारियों का कारण भी इन कषायों की प्रबलता है। अतः सम्यग्चारित्र के अभ्यास से इन पर विजय प्राप्त करके मनुष्य अवसाद आदि का शिकार नहीं होता। अपने भीतर से क्रोध, मान, माया, लोभ को कम करना यह हमारा आंतरिक चरित्र है और बाहर से भोगों के प्रति उदासीन भाव और अपनी आत्मा के प्रति उत्साह यह बाह्य चरित्र है। महावीर कहते हैं कि व्रत, उपवास, तपस्या भी यथा शक्ति करने से शरीर के प्रति ममत्व घटता है, मनुष्य शारीरिक रोगों से भी मुक्त होता है और कर्मों से भी।

छठा कदम - अहिंसा और अपरिग्रह -

भगवान् महावीर ने सम्पूर्ण जीवन को अहिंसा पूर्वक जीने को कहा। हम ऐसा जीवन जियें जिससे किसी दुसरे प्राणी को कष्ट न हो और और किसी के प्राणों का हरण न हो। जैसे हमें दुःख पसंद नहीं वैसे ही दूसरों को भी पसंद नहीं है अतः शांति पूर्ण सहस्तित्व के लिए अहिंसा का आचरण जरूरी है।

आसक्ति बहुत बड़ा दुःख है, मकान, जमीन, रुपया पैसा सोना चांदी आदि के प्रति अत्यधिक मोह आपको चिंता ग्रस्त बनाता है अतः भगवान् कहते हैं कि अपने पास उतना ही रखो जितनी जरूरत है, व्यर्थ का सामान मत जोड़ो।

आगाह अपनी मौत से कोई वशर नहीं

सामान सौ बरस का पल की खबर नहीं

सातवाँ कदम - सल्लेखना –या संथारा

भगवान् महावीर ने मनुष्यों को जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन जीने की कला सिखलाई | उन्होंने कहा कि जो जन्म लेता है वह मरता भी है यह जीवन की एक बहुत बड़ी सच्चाई है – इसे हमें स्वीकार कर लेना चाहिए | मरना तो एक क्षण का है किन्तु उसके पूर्व अंत समय तक जीवन है अतः हमें अपना अंत समय धर्म ध्यान व्रत उपवास पूर्वक व्यतीत करना चाहिए ,जो छूट जाने वाला है उसे तुम पहले ही छोड़ दो तो सुख पूर्वक अंत तक जी लोगे | इसलिए जब ऐसा लगने लग जाये कि अब आयु कम रह गयी है तब घबड़ाना नहीं चाहिए ,बल्कि अपने सुन्दर जीवन रुपी निबंध का अच्छा उपसंहार या समापन करना चाहिए |अंत समय तक भगवान् का भजन करना चाहिए, अपनी भूलों के लिए सबसे क्षमा याचना करना चाहिए और संयम पूर्वक रहना चाहिए |

इस प्रकार भगवान् महावीर ने मनुष्यों को जीवन सत्यं ,शिवम् और सुन्दरम् बनाने की प्रेरणा दी उसके उपाय भी बतलाये |यदि उनके बतलाये मार्ग पर हम सभी चलें तो अवश्य सुखी हो सकते हैं |

अवसाद दूर करता है भगवान् महावीर का अध्यात्म

डॉ. अनेकान्त कुमार जैन

आज विश्व के मानचित्र पर एक सबसे बड़ी समस्या है – बढ़ता मानसिक तनाव और अवसाद। यह एक ऐसी समस्या है जिससे सामने आधुनिकता और विकास के हमारे सारे तर्क बेमानी लगने लगे हैं। इतना पैसा, समृद्धि, विकास आखिर किस काम का यदि हम सुख और शांति की नींद भी न ले सकें। मनुष्य का यह विकास नहीं हास ही माना जायेगा कि सारे संसाधन होते हुए भी वह निरा असहाय और अशांत है, आखिर ऐसी उन्नति किस काम की जो अशांति पैदा करती है, हमें सुख से जीने नहीं देती। विकास की इस छद्म दौड़ ने हमें इकट्ठा करना तो सिखाया, लेकिन त्याग के मूल्य को समाप्त कर दिया जो हमें सुख देता था। विकास ने हमें सोने के लिए मखमली गद्दे तो दे दिए लेकिन वो नींद छीन ली जो चटाई पर भी सुकून से आती थी। निश्चित ही हम किसी परिपूर्ण दिशा में आगे नहीं बढ़ रहे हैं। विकास को नकारा नहीं जा सकता लेकिन जीवन की सुख शांति से भी समझौता नहीं किया जा सकता। ऐसे द्वंद्वात्मक माहौल में हमें कोई ऐसा समाधान निकालना होगा जिससे इन दोनों का संतुलन बना रहे।

भारत में युवा पीढ़ी भी तेजी से इसकी गिरफ्त में आ रही है। इनका भौतिक जगत जितना गतिमान और समृद्ध दिखाई दे रहा है इनका भाव जगत उतना ही क्षत - विक्षत है। उम्र की उठान पर ही यह घनघोर हताशा और निराशा के शिकार हो रहे हैं। इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए मनोवैज्ञानिकों तथा चिकित्सकों द्वारा काफी उपाय किये जा रहे हैं। काफी हद तक उन्हें समाधान मिलते भी हैं किन्तु ऐसी समस्या उत्पन्न ही न हो इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने उन शाश्वत सिद्धांतों के अपनाने का प्रयास करें जिनसे प्राचीनकाल से ही जीवों ने शाश्वत सुख और शान्ति को प्राप्त किया है।

ईसा से लगभग छह सौ वर्ष पूर्व भारत की धरती पर भगवान महावीर का जन्म साधना के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी युग की शुरुआत थी। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन वैशाली नगर के ज्ञातृवंशी कश्यप गोत्रीय क्षत्रिय राजा सिद्धार्थ तथा माता त्रिशला के राजमहल में बालक वर्धमान के रूप में एक ऐसे पुत्र ने जन्म लिया जिसने तत्कालीन प्रसिद्ध धर्म की व्याख्याओं में अध्यात्म को सर्वोपरि बतलाकर संपूर्ण चिन्तन धारा को एक नयी दिशा दी। भगवान महावीर ने

अपनी साधना के बल से कुछ ऐसे नवीन अनुसन्धान किये हैं जिन्हें यदि स्वीकार कर लिया जाए तो मनुष्य अवसाद में जा ही नहीं सकता ।

अनेकान्त का सिद्धांत

भगवान् महावीर ने वस्तु का स्वरूप समझाते समय उसे अनेकान्तात्मक बतलाया । यह सिद्धांत है कि विरोध वस्तु के स्वभाव में है । यह दार्शनिक सिद्धांत व्यवहारिक व्याख्या सहित समझ लिया जाय तो मनुष्य विरोध को स्वीकार कर पायेगा और जीवन में मानसिक संतुलन नहीं खोएगा । निराशावादी और हठ धर्मिता के स्वभाव वाले लोग अक्सर प्रत्येक वस्तु, घटना या परिस्थिति को सिर्फ अपने नज़रिये से देखते हैं । उनका यह एकांगी दृष्टिकोण उन्हें इसलिए अवसाद की ओर धकेल देता है क्योंकि वे घटना या परिस्थिति के दूसरे पक्ष की तरफ देख ही नहीं पाते हैं । भगवान् महावीर ने वस्तु का स्वरूप अनन्त धर्मात्मक बताया है । उसी अनन्त धर्मात्मक वस्तु का स्वरूप को समझकर मनुष्य निज स्वरूप का विचार करे तो वह कभी तनाव या अवसाद से ग्रसित नहीं हो सकता । दो विरोधी दिखने वाले धर्मों का एक ही द्रव्य में एक साथ सहावस्थान होना तो वस्तु का अनेकान्तात्मक स्वभाव है । इसलिए मेरा दृष्टिकोण जो है ठीक उससे विपरीत दृष्टिकोण या विचार दूसरे के हो सकते हैं - यह स्वीकारोक्ति ही व्यक्ति को आधे से अधिक तनावों से मुक्त कर देती है और वह सुखी हो जाता है फलस्वरूप वह अवसाद से ग्रसित ही नहीं होता ।

अहिंसा का सिद्धान्त

भगवान् महावीर का अहिंसा का सिद्धान्त प्रत्येक सिद्धान्त के पृष्ठभूमि में रहता ही है । प्रमाद के योग से प्राणों का हरण कर लेना हिंसा कहलाता है । मन-वचन-काय से किसी जीव को दुःखी करना या उसके प्राणों का हरण कर लेना ही मुख्य रूप से हिंसा है । हिंसा करने से पहले व्यक्ति का मन, विचार, भाव आदि स्वयं हिंसक हो जाता है । लगातार हिंसा की विचारधारा होने से मनुष्य तनाव में रहता है । दूसरों को दुःखी करने वाले को सबसे पहले स्वयं परेशान होना पड़ता है । अहिंसा का भाव मन को शान्त रखता है अतः तनाव मुक्त रहने के लिए अहिंसक विचारधारा बहुत आवश्यक है ।

अपरिग्रह का सिद्धान्त

भगवान् महावीर ने माना कि दुखों का मूल कारण परिग्रह भी है । मूर्छा अर्थात् आसक्ति को परिग्रह कहा गया है । आवश्यकता से ज्यादा अचेतन पदार्थों का संग्रह मनुष्य को तनाव में डाल देता है । जो मनुष्य जितना कम परिग्रह रखता है उतना ही तनावमुक्त रहता है । मनुष्य

जिस भी पदार्थ में आसक्त रहता है उस पदार्थ का वियोग होने पर वह अत्यन्त मानसिक दुःखों को भोगता है जो तनाव का कारण बनता है। अतः जितना कम परिग्रह तथा आसक्ति उतनी ही तनाव मुक्ति।

कर्म सिद्धान्त

“जो जैसा करता है, वो वैसा भरता है” - यह सामान्य सा कर्म सिद्धान्त है जो सम्पूर्ण भारतीय जनमानस में समाया हुआ है। जैन कर्म सिद्धान्त में इसकी गहरी मीमांसा की गयी है। जैन दर्शन के अनुसार यह सृष्टि अनादि अनन्त है इसका कोई निर्माता या नियन्ता नहीं है। सभी संसारी जीव अपने कर्मों का फल समय आने पर अनुकूल या प्रतिकूल भोगते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति अपने कर्मों के लिये स्वयं उत्तरदायी होता है, वह जानता है कि वह अपने द्वारा किये गये शुभाशुभ भावों का फल खुद ही भोगने वाला है। पाप के फल में उसे कोई शरण देने वाला नहीं है अतः वह अशुभ कर्मों से यथाशक्ति बचने का प्रयत्न करता है तथा प्रतिकूलताओं में स्वयं कृत कर्मों का ही प्रतिफल जानकर शान्तचित्त ही रहता है।

सुखी होना, दुखी होना - यह अपने स्वयं के कर्मों का फल है। उसी कर्म से उत्पन्न किया जानेवाला सुख-दुख कर्मफल है। दूसरा मुझे सुखी या दुखी करता है - यह विचार ही वह करता है जो तत्त्वज्ञान से शून्य है। पर पदार्थ तुम्हें सुखी या दुखी नहीं कर सकते हैं; वे मात्र सुख या दुःख के निमित्त हैं। इस प्रकार का श्रद्धान होने पर हमें जीवन में दूसरों को दोष देने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगता है और स्वयं के कर्म सुधारने की समझ बढ़ती है। प्रत्येक मनुष्य अपना-अपना कर्म फल भोगता है, दूसरे का नहीं अतः मेरे जीवन में जो दुःख या प्रतिकूलता हैं उसका मूल कारण दूसरा नहीं है, वह तो मात्र निमित्त हैं। ऐसा चिन्तन करने से मनुष्य व्यर्थ ही तनावग्रस्त नहीं होता और अवसाद से बचा रहता है।

सर्वज्ञता का सिद्धान्त

जैन दर्शन सर्वज्ञता के सिद्धान्त को मानती है। सर्वज्ञ पर विश्वास करने वाला कभी तनावग्रसित हो ही नहीं सकता। वीतरागी सर्वज्ञ परत्मात्मा के अतीन्द्रिय ज्ञान में तीनों लोकों के प्रत्येक द्रव्य की तीनों कालों (भूत, भविष्य, वर्तमान) की प्रत्येक पर्याय को प्रत्यक्ष जानते हैं। कहा गया है कि वे सर्वज्ञ सम्पूर्ण द्रव्यों व उनकी पर्यायों से भरे हुए सम्पूर्ण जगत् को तीनों कालों में जानते हैं। तो भी वे मोहरहित ही रहते हैं। आज से २६०० वर्ष पहले भगवान महावीर सर्वज्ञ हो गये थे, उनके केवलज्ञान में भविष्य भी झलक गया था। तत्त्वज्ञानी सम्यग्दृष्टि मनुष्य इस बात पर अटल श्रद्धान रखता है - 'जो होना है सो निश्चित है, केवल ज्ञानी ने गाया है'

अतः वही किसी भी घटना, परिस्थिति को लेकर आश्चर्य चकित नहीं होता और न परेशान होता है। फलस्वरूप वह हर प्रतिकूल - अनुकूल परिस्थिति की तैयारी पूर्व से ही कर चुका होता है। मैं जीवद्रव्य हूँ, मेरा हर परिणमन केवल ज्ञानी पूर्व में जान चुके हैं। अतः हर घटना निश्चित है, उसमें मेरा कुछ भी नहीं है। ऐसा विचार करके वह प्रत्येक पल निश्चिन्त रहता है, तनावग्रसित नहीं होता और न अवसाद में जाता है। वह तो यही विचार करता है -

'जो जो देखी वीतराग ने, सो सो होसी वीरा रे

अनहोनी सो कबहूँ न होसी, काहे होत अधीरा रे'

अकर्तावाद का सिद्धांत

जैन दर्शन अकर्तावादी दर्शन है। सारी दुनिया कर्तृत्व के नशे में चूर है। जैन दर्शन ईश्वर को भी सृष्टि का रचयिता नहीं मानता तथा यह भी मानता है कि, 'एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ नहीं करता'। प्रत्येक द्रव्य अपना स्वतन्त्र परिणमन कर रहा है। जो कोई भी कर्ता है वह अपने स्वभाव का ही कर्ता है किन्तु परभाव में निमित्त होने पर भी, परभाव का न कर्ता है और न भोक्ता। अकर्तावाद मनुष्य की पराश्रय बुद्धि में सुधार करता है तथा दूसरा मेरा कुछ भला या बुरा कर सकता है - यह मिथ्या मान्यता दूर हो जाती है। फलस्वरूप व्यर्थ का तनाव - अवसाद से मनुष्य दूर रहता है।

इनके अलावा भगवान् महावीर ने चित्त की निर्मलता व एकाग्रता को बढ़ाने के लिये अनेक उपायों की चर्चा की है जो न केवल कषायों में कमी लाते हैं वरन् वे चित्त की एकाग्रता व तत्त्वज्ञान में वृद्धि करके तनाव मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इनमें सस्वर पूजन-पाठ-भक्ति-स्वाध्याय-मंत्रजाप व सामायिक-ध्यान-योग आदि कार्य प्रमुख हैं। जैन योग पद्धति में कायोत्सर्ग, प्राणायाम, आसान तथा ध्यान कि क्रियायें गहरे अवसाद से बाहर निकालने कि सामर्थ्य रखती हैं।

अनेक वैज्ञानिक अध्ययनों से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर किये जाने वाले सस्वर देव पूजन-भक्ति, स्तुति पाठ शरीर में कोलेस्ट्रॉल व हानिकारक द्रव्यों की मात्रा में कमी करते हैं। इन क्रियाओं के माध्यम से शरीर में कषायों को बढ़ाने वाले हानिकारक हारमोन्स का स्राव बन्द हो जाता है तथा फेफड़े, हृदय व पाचन तंत्र की क्रियाशीलता में वृद्धि होकर हानिकारक विजातीय तत्वों को शरीर से बाहर निकालने में मदद मिलती है। सस्वर वाचन से तंत्रिका तंत्र व रक्तवह नाडियों का लचीलापन बढ़ता है जो शरीर की तनाव सहन करने की क्षमता को बढ़ाता है।

इसके साथ ही ध्यान या सामायिक का तनाव घटाने में महत्वपूर्ण योगदान हैं। ध्यान के लाभों से समस्त ही विश्व आज सुपरिचित है। जैन दर्शन में कहा गया सामायिक ध्यान का ही एक रूप है जिसमें वस्तु स्वरूप का चिन्तन करते हुये बाह्य जगत के विषयों से मन को हटाकर उसे आत्म स्वरूप में एकाग्र करने का अभ्यास किया जाता है। इस क्रिया में चित्त की चंचलता व शरीर की अनेकानेक क्रियाओं में मन्दता आ जाती है, शरीर पूर्णतः शिथिल हो जाता है किन्तु ज्ञान पूर्णतः जाग्रत रहता है। इस ध्यान या सामायिक का प्रभाव शरीर व मन के तनावों को घटाने की दृष्टि से अद्वितीय है, उत्कृष्ट ध्यान को मुक्ति का कारण कहा गया है।

स्वाध्याय भी तनाव को घटाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। तीव्र कषायी व्यक्ति भी यदि स्वाध्याय करता या सुनता है तो उसकी कषाय में शनैः शनैः तत्त्वज्ञान-वस्तु स्वरूप के यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति होने से कमी आने लगती है। वास्तविक वस्तु स्वरूप का ज्ञान होने से व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में तनाव ग्रस्त नहीं होता तथा प्रतिकूलताओं में भी वह समाधान का मार्ग निकाल ही लेता है। कहा भी गया है कि 'स्वाध्यायः परमं तपः' तथा ज्ञान ही सर्व समाधान कारक है। इस प्रकार स्वाध्याय से अर्जित ज्ञान तनाव मुक्ति के लिये उत्कृष्ट समाधान प्रस्तुत करता है तथा तनाव रहित जीवन की कला सिखाता है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ थे महावीर

डा. अनेकान्त कुमार जैन

भगवान महावीर भ्रष्टाचार के सख्त खिलाफ थे.वे जनता के अनुसार राज्य की कल्पना करते थे न कि शासक के अनुसार.युवावस्था में सत्य की खोज के कारण वे युवाओं के प्रेरणास्रोत बन गए.महावीर का सिद्धांत था 'जीओ और जीने दो।' वे कहते थे कि जैसे तुम चाहते हो कि दूसरे लोग जीएं, लेकिन हमें भी जीने दें, उसी तरह दूसरे भी चाहते हैं कि उन्हें शांति से जीने दिया जाए। हर प्राणी की यह इच्छा होती है कि वह सुखी रहे, उसे कोई परेशान न करे। इसलिए मजदूरों से ज्यादा काम लेना या उन्हें कम मजदूरी देना भी अपराध है.हर तरह के शोषण के वो खिलाफ थे .

महावीर स्वामी ने कहा, इच्छा तो आकाश की तरह अनंत हैं। आज एक बात की इच्छा हुई, कल उसकी पूर्ति होने पर परसों उससे ज्यादा की जरूरत होगी, इसलिए इच्छा बढ़ाने में सुख कतई नहीं है। इच्छाओं को रोको, अगर इच्छा रुक गई तो संतोष होगा और संतोष होते ही सुख की प्राप्ति होगी। वे आवश्यकता से अधिक परिग्रह के खिलाफ थे .आवश्यकता से ज्यादा धन ,सामान एकत्रित करना मूर्खता है.दुख की जड़ है –महावीर के इस वाक्य की आज क्या कीमत है ? आज कौन समझेगा इसका रहस्य ?

भ्रष्टाचार के विरोध में चारो तरफ आंदोलन हो रहे हैं.जो स्वयं भ्रष्ट हैं वे भी इसका विरोध सिर्फ इसलिए कर रहे हैं कि उन्हें भी एक अदद ईमानदार दोस्त तो चाहिए ही. हम कानून बना सकते हैं ,बनना भी चाहिए.लेकिन देखा गया है कि जो स्वयं ईमानदार नहीं है उसे दुनिया कि कोई भी ताकत ईमानदार नहीं बना सकती.कानून का डर भी सीधे लोगों को ही होता है.दुष्ट प्रकृति के लोग फिर भी नहीं सुधरते. स्वाभाविक ईमानदारी के लिए हमें एक बार फिर उन्हीं शाश्वत मूल्यों कि तरफ देखना ही पड़ेगा जिन्हें हमने पुरानी और दकियानूसी बातें कहा कर बहुत पीछे छोड़ दिया हैं .

हम केवल दो बातों को लें- सादगी और संतोष. सादगी का मूल्य हम भूल चुके हैं.आज एक क्लर्क भी महंगे कपड़े,महँगी गाड़ी,ऊँची ईमारत,हवाई यात्रा आदि आदि की चाहत तो रखता ही है, उसके लिए प्रयास भी करता है.इसके लायक वेतन तो है नहीं तो बेईमानी करता है.सादगी का सिद्धांत तो यह है कि करोड़पति भी

हो तो भी जीवन सादा हो. उसी में सुख माने. संतोष भी नहीं रखेंगे तो इच्छाएं तो अनंत होती हैं. सादगी रहेगी तो जरूरतें कम से कम होंगी, संतोष रखेंगे तो इच्छाएं परेशां नहीं करेंगी.

हम दूसरों को दोष क्यों दें ? हम भी कम नहीं हैं. आज हमने स्वयं ही इतने ताने बने बुन रखे हैं कि लालच के कारण हमने अपने सारे मूल्यों की बलि चढ़ा दी है. परिवार के साथ सारी जिम्मेदारियों को निभाते हुए सादगी और संतोष के साथ रह पाना आज के युग में ज्यादा बड़ी साधना है. कोई आज माने , कल माने , चाहे अनन्त काल बाद माने , मानना यही पड़ेगा कि सच्चे सुखी जीवन का एक ही उपाय है और वो है सादगी और संतोष, जिसके बिना ईमानदारी बहुत मुश्किल है. महावीर का अपरिग्रह का सिद्धांत भ्रष्टाचार की समस्या का तोड़ है. अगर हम समझ गए तो बच जायेंगे नहीं तो कोई नहीं बचा सकता .

लेखक परिचय

प्रो० डॉ० अनेकांत कुमार जैन

शिक्षा-एम.ए.(जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन) ,जैनदर्शनाचार्य, पी-एच.डी, NET/JRF

पिता- प्रो.डॉ.फूलचन्द जैन प्रेमी,वाराणसी, माता - श्रीमती डॉ मुन्नीपुष्पा जैन,वाराणसी

प्रकाशन –

१.बारह ग्रंथों का लेखन और संपादन

२.लगभग ७० शोधपत्र, राष्ट्रिय / अन्ताराष्ट्रिय शोध-पत्रिकाओं में हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित।

३.विभिन्न राष्ट्रिय समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में धर्म-संस्कृति तथा समसामयिक विषयों पर शताधिक लेख ,कवितायँ और कहानियाँ प्रकाशित।

४.प्राकृत भाषा की प्रथम पत्रिका 'पागद-भासा'के मुख्य संपादक तथा अनेक पत्र पत्रिकाओं के संपादक मंडल के सदस्य

पुरस्कार / उपाधियाँ / सम्मान -

१. महर्षि वादरायण व्यास युवा राष्ट्रपति पुरस्कार २.महावीर पुरस्कार ३. शास्त्रिपरिषद पुरस्कार ४.विद्वत्परिषद पुरस्कार
५.कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार ६. अर्हत्वचन पुरस्कार ७.जैन सिद्धांत भास्कर ८.युवा वाचस्पति ९. अहिंसा इन्टरनेशनल अवार्ड
१०.दिल्ली सरकार द्वारा श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान आदि

अन्य योगदान -

१.देश/विदेश में लगभग पचास राष्ट्रिय/अन्तर्राष्ट्रिय सेमिनारों में शोधपत्र प्रस्तुत।

२.सभा संचालन/प्रखर वक्ता/दूरदर्शन आकाशवाणी केन्द्र वार्ता/स्क्रिप्ट लेखन / काव्य-कहानी लेखन

३.ब्लॉग लेखन ,ऑनलाइन शिक्षण ,आध्यात्मिक प्रवचनकार

३.जैन ध्यान योग , तनाव प्रबंधन,मोटिवेशनल आदि कार्यशालाओं के विशेषज्ञ

४.जापान तथा ताइवान में विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित सर्वधर्म अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलन में भारत से जैनधर्म का प्रतिनिधित्व ।

५.राष्ट्रिय मूल्याङ्कन एवं प्रत्यायन परिषद(NAAC) के टीम सदस्य

सम्प्रति : अध्यक्ष – जैनदर्शनविभाग ,दर्शन संकाय , श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ ; (मानव संसाधन विकास मंत्रालयाधीन मानित विश्वविद्यालय) कुतुबसांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110016

सम्पर्क सूत्र : जिन फाउण्डेशन, A93/7A, नन्दा हास्पिटल के पीछे, छत्तरपुर एक्सटेंशन ,नई दिल्ली-110074, Phone 9711397716

Email - drakjain2016@gmail.com

Blog - <https://anekantkumariain.blogspot.com/>

Facebook pages - <https://www.facebook.com/DrAnekantKumarJain/>

<https://www.facebook.com/PrakritLanguage/>

<https://www.facebook.com/AhimsaDarshanahinsaDarsana/>

<https://www.facebook.com/DepartmentOfJainPhilosophy/>

